और ईसा (सलामती हो उन सब पर) इन सारे पैगम्बरों ने बुलाया। शब्द "अल्लाह" खुदा के लिए अरबी का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है- एक और सिर्फ एक ही सच्चा खुदा।

वैसे भी अरबी बोलने वाले यहूदी तथा ईसाइ भी खुदा के लिए शब्द अल्लाह ही प्रयोग करते हैं। आप बाइबल का अरबी अनुवाद देखें कि अंग्रेज़ी में जहाँ भी 'गॉड' है उसका अनुवाद 'अल्लाह" किया गया है।

हालांकि मुस्लिम, ईसाइ और यहूदी एक ही खुदा को मानते हैं लेकिन फिर भी ईश्वर के बारे में सबकी मान्यताएँ बहुत भिन्न है, उदाहरण के तौर पर मुसलमान अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं ठहराते और न ही "ट्रीनिटी" में विश्वास रखते हैं बल्कि वे अल्लाह को सर्वशक्तिमान और किसी भी प्रकार की कमी से परे मानते हैं।

इस्लाम आतंकवाद को बढ़ावा देता है - गलतफहमी # ४

शायद यह इस्लाम के बारे में सबसे बड़ी गलतफहमी है, जिसका अधिकतम श्रेय हमारी मीडिया को जाता है जिसने हर उस मुसलमान को एक दहशतगर्द बना कर पेश किया है जो किसी प्रकार की लड़ाई लड़ रहा है फिर चाहे उसकी लड़ाई इंसाफ के लिए हो या बुराई के लिए, और फिर चाहे वे दूसरों पर ज़ुल्म कर रहे हों या खुद उनपर ज़ुल्म किया गया हो। एक सवाल जो मन में उठता है: क्या इस्लाम आतंकवाद को बढ़ावा देता है? बिल्कुल नहीं! सच तो यह है कि इस्लाम ऐसे हर कृत्य को नकारता और उसकी भर्तस्ना करता है जिसमें बेगुनाह और निहत्थे लोगों को निशाना बनाया जाए।

नि:संदेह इस्लाम ज़ुल्म, हिंसा एवं अन्याय के खिलाफ चुप्पी को बिल्कुल भी पसंद नहीं करता। और जिस धर्म या समाज ने ऐसा नहीं किया उनका अस्तित्व ही खत्म हो गया। लेकिन साथ ही निहत्थों, औरतों, बूढ़ों और बच्चों पर किसी भी प्रकार के हमले को इस्लाम बर्दाश्त नहीं करता। अल्लाह पवित्र कुरआन में कह रहा है कि:

"और लड़ो अल्लाह की राह में उनसे जो तुमसे लड़ते हैं, और ज़ुल्म न करो अल्लाह ज़ालिम को पसंद नहीं करता है।" (कुरआन २:१९०)

युद्ध की स्थिती में भी इस्लाम ने कई शर्तों को लागू कर रखा है, जैसे कि औरतों, बच्चों, बूढ़ों, अपंग, पागल या वे लोग जो लड़ न सकते हों ऐसे लोगों पर कोई हाथ न उठाए। यहाँ तक कि मुसलमनों को युद्ध में भी फसल या पेड़ों को नुकसान पहुँचाने से मना किया है। ऐसे उदार कानून न तो उस समय किसी फौज में थे और न आज ही कोई इसका दावा कर सकता है।

पवित्र कुरआन किसी भी बेगुनाह की जान लेने के पाप और इंसानी ज़ीन्दगी के महत्व का स्पष्ट रूप से वर्णन करता है, साथ ही मुसलमानो को दूसरे धर्म के लोगों के साथ सज्जनता से पेश आने की सीख भी दी गई है।

"जो इंसान किसी को बिना इसके कि वह किसी का कातिल हो या धरती पर फसाद पैदा करने वाला हो, कत्ल कर डाले तो ऐसा है कि उसने सभी लोगों को कत्ल कर दिया, और जो इंसान किसी की जान बचाये, उसने मानो सभी को ज़िन्दा कर दिया" (कुरआन ५:३२)

"जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथ अच्छा बर्ताव करने से अल्लाह तुम्हें नहीं रोकता, (बल्कि) बेशक अल्लाह तो इंसाफ करने वालों से प्रेम करता है।" (कुरआन ६०:८)

अब ज़रा बताएँ कि पवित्र कुरआन की इन स्पष्ट आयतों को पढ़लेने के बाद कोई कैसे इस्लाम पर आतंकवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगा सकता है?

निष्कर्ष

ऐसे कई प्रयास किये जाते रहे हैं जिससे लोगों के मन में यह बात बैठ जाए कि इस्लाम एक नया धर्म है और मानव स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है तथा इसमें मानवीय मूल्यों की कोई हैसियत नहीं है। इस्लाम के बारे में कोई भी निर्णय लेने से पहले इन बातों पर ज़रा गौर करें:

कौन हो जो इन गलतफहमियों और झूठ न मान कर सत्य को खोजने की कोशिश करता है?

क्या आपने कभी उन बातों के बारे में ज़रा भी खोज-बीन की जो आपने दूसरों या मीडीया से इस्लाम के बारे में सुनी है?

क्या दुनिया भर में लाखों लोग जो इस्लाम स्वीकार कर रहे हैं एक कठोर और अमानवीय रास्ते को चुन रहे हैं?

"जो लोग ईमान लाए और अनुकूल कर्म किये उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिये क्षमा और बड़ा कर्म-फल है।" (कुरआन ५:९)

इस्लाम के बारे में सच्ची जानकारी प्राप्त करने एवं इसकी सुंदरता को जानने के लिए पवित्र कुरआन का अध्ययन करें। अपनी भाषा में मुफ्त प्राप्त करने हेतु हमसे संपर्क करें:

९९२०९५५५९७ / ९९२०३७०६५९

albirr.foundation@gmail.com | www.albirr.in

परिचय

क्या कभी आपने सोचा कि एक नन सर से पैरों तक ढंकी होती है और लोग उसे खुद को ईश्वर के लिए समर्पित करने के लिए सम्मान की दृष्टी से देखते हैं, लेकिन जब एक मुसलमान औरत हिजाब (नकाब) पहनती है तो उसे 'पीड़ित" कहा जाता है ? या ऐसा क्यों है कि एक यहूदा दाढ़ी रख कर धर्मनरिपेक्ष कहलाता है, लेकिन एक मुसलमान ऐसा करे तो 'कट्टरपंथी" हो जाता है ?

ऐसा व्यतीत होता है कि पश्चिम को मुसलमान और इस्लाम के बारे में बहुत-सी गलत फहमियाँ हैं। लोग यह समझते हैं की पश्चिम आधुनिक, उदार एवं सुलझा हुआ है, जबकि इस्लाम इसका एकदम उलट है: पिछड़ा हुआ, असभ्य एवं पीड़ित। इसका एक बहुत बड़ा कारण है मीडिया जिसने मुसलमानों को कुछ इस तरह पेश किया है जो की इस्लाम के बिल्कुल उलट है। इस्लाम को अगर समझना है तो लकीर के फकीर न बनकर हर मामले को कुछ मुसलमानो के अमल पर परखने के बजाय इस्लाम की शिक्षा पर परखना होगा। इसी लिए हमें यह एहसास हुआ की ऐसे ही कुछ आम गलतफहमियों का निवारण करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

हिजाब अत्याचार है - गलतफहमी #१

तो वास्तविकता में हिजाब है क्या ? एक मुस्लिम औरत जब किसी कुलीन कपड़े से अपने सारे शरीर को अजनबी मरदों के सामने ढंकती है तो उसे हिजाब कहते हैं। हालांकि हिजाब सिर्फ बाहरी स्वरूप का नाम नहीं; बल्कि अच्छी बात, सज्जनता, कूलीनता तथा अच्छे आचरण को भी कहते हैं। और यह बताने की आवश्यकता नहीं कि यह सारी बातें मर्दों के लिए भी है।

हिजाब में ऐसा कुछ नहीं जो एक मुस्लिम औरत को उसे अपने विचार व्यक्त करने से या संपत्ति रखने से या शिक्षा और करियर से या अपना जीवन साथी पसंद करने से रोके। हिजाब तो सम्मान एवं गरिमा को बढ़ाता है, एक सशक्तिकरण है, एक ज़मानत है ताकि औरत को उसके भीतरी आध्यात्मिक सुंदरता से जाना जाए, न की बहरी दिखावे वाली खुबसूरती से। हिजाब औरत को दिखावे से आज़ाद करके उसके सम्मान को बढ़ाता है ताकि उसकी पहचान उसके समझ-बूझ से हो न की कामुकता से।

"हे नबी अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि (जब निकलें) तो अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें, इसमें इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जायें और सताई न जायें। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।" (कुरआन ३३:५९)

मुस्लिम औरत तो हिजाब इसलिए पहनती है कि यह उसके रब अल्लाह का आदेश है जिसका पूरा करना उसकी इबादत है, वैसे भी अल्लाह जानता है कि उसके बन्दों के लिए क्या बेहतर है।

हिजाब औरत को अपनी विशुद्धता कायम रखते हुए समाज का एक सक्रीय हिस्सा बनने की आज़ादी प्रदान करता है, हिजाब तो औरत को उसी समय पहनना है जब उसे सार्वजनिक स्थान पर जान होता है घर में परिवार के साथ हिजाब की कोई ज़रुरत नहीं !

हिजाब किसी भी प्रकार के दमन, उत्पीड़न या दबाव की निशानी नहीं है। बल्कि यह तो अपमानजनक टिप्पणियों, अवांछित एवं अनुचित पक्षपात के प्रति एक सुरक्षा कवच है। इस्लाम को स्वीकार करने वालों में से ७५% औरते हैं ! क्या आप ऐसे धर्म को स्वीकार करेंगे जो आपके दमन का कारण बनता हो ? तो अगली बार जब आप किसी मुस्लिम औरत देखें तो यह जान लीजिए कि उसने सिर्फ अपने बाहरी शरीर को ढाँपा हुआ है, अपने मन या बुद्धि को नहीं !

इस्लाम औरतों का दमन करता है - गलतफहमी # २

सबसे बड़ी गलतफहमियों में से एक इस्लाम में औरतों की नकारात्मक छवी है, जैसे कि इस्लाम औरत को दबाता और उसका दमन करता है। इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार सिर्फ एक चीज़ ऐसी है जो अल्लाह की दृष्टी में लोगों के बीच अंतर पैदा करती है और वह है - अल्लाह का डर।

कुरआन की यह आयत दर्शाती है कि सच्ची प्रतिष्ठा एवं सम्मान किसी पर अंकित नहीं होती फिर चाहे वह गोरा हो या काला, अमीर हो या गरीब, पुरुष हो या स्त्री बल्कि जो जितना अल्लाह से डरने वाल होगा अल्लाह की दृष्टि में वह उतना ही महान होगा। इसीलिए यह देख कर आश्चर्य करने की ज़रुरत नहीं कि हर पाँच में से चार महीलाएँ हैं जो इस्लाम स्वीकार कर रही हैं। निम्नलिखित ऐसे ही कुछ अधिकार हैं जो इस्लाम औरतों को प्रदान करता है जिसके कारण इस्लाम स्वीकार करने वालों में महीलाओं का अनुपात अधिक है:

"अल्लाह की नज़र में तुममें सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो तुम में सबसे अधिक (अल्लाह का) डर रखता है।" (कुरआन ४९:१३)

- अपनी संपत्ती पर उनका पूरा अधिकार।
- अपना जीवन-साथी चुनने का अधिकार।
- शादी के बाद भी अपने ही कुलनाम के प्रयोग का अधिकार।
- संपत्ती खरीदने, व्यवसाय करने, शिक्षा प्राप्त करने और एक से काम का एक समान वेतन प्राप्त करने का अधिकार।
- विरासत में हिस्सा और शादी-शुदा जीवन में उपेक्षा तथा दुराचार के कारण शादी खत्म करने का अधिकार।
- इबादत के हर स्वरूप में मर्दों की तरह हिस्सा लेने का अधिकार।

यह और इन जैसे कई अधिकारों को इस्लाम ने १४०० से अधिक वर्ष पूर्व सुनिश्चित कर दिया था, जिसे आज तक पश्चिम का सभ्य समाज उन्हें नहीं दे पाया है।

इसमें कोई शक नहीं कि ऐसी मुस्लिम औरतें भी हैं जिनके अधिकारों का हनन किया गया और उन्हें दबाया गया है। लेकिन यह इस्लाम की गलती नहीं। दुनियाभर भर के कई क्षेत्रों, कबीलों और समाजों ने इस्लाम की शिक्षाओं को अपने अज्ञानता या झूठी प्रथाओं से धुमिल कर दिया है।

"जिस किसी ने अच्छा काम किया, पुरुष हो या स्त्री, यदि वह 'ईमान" पर है, तो हम उसे अवश्य अच्छा जीवन प्रदान करेंगे, और हम उन्हें उनका बदला अवश्य देंगे जो अच्छे काम वे करते थे उसके बदले में।" (कुरआन १६:९७)

जहाँ इस्लाम महीलाओं के इतने अधिकार प्रदान करता है वहीं इस तथ्य को भी उजागर करता है कि मर्द और औरत एक जैसे नहीं हैं, अल्लाह कहता है "**...और मर्द औरत की तरह नहीं है...**" (कुर्आन ३:३६)

इस निर्विवाद सच्चाई को सामने रखते हुए ही इस्लाम ने मर्द एवं औरत दोनो को अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ दी हैं। औरत को संम्मान दिया गया तथा उसे घर और परिवार के देख-भाल की ज़िम्मेदारी सौंपी गई, वहीं मर्द को यह ज़िम्मेदारी दी गई कि वो घर-परिवार को आर्थिक सहायता दे तथा उनकी हिफाज़त करे।

निष्कर्श स्वरूप, इस्लाम में औरत के स्थान को पैगम्बर मुहम्मद (स०) के निम्न कथन के द्वारा संक्षिप्त किया जा सकता है कि;

"दुनिया और दुनिया की हर चीज़ कीमती है, लेकिन दुनिया की सबसे कीमती चीज़ नेक औरत है।"

मुस्लिम किसी नए खुदा की पूजा करते हैं जिसका नाम है "अल्लाह" - गलफहमी # ३

कई गैर-मुस्लिमों को यह गलतफहमी है कि मुसलमान यहूदियों और इसइयों की तुलना में किसी अलग खुदा की इबादत करते हैं। संभवत: इस गलतफहमी का एक बड़ा कारण यह हो सकता है कि मुसलमान खुदा को अंग्रेज़ी के शब्द गॉड कि बजाय अल्लाह कहते हैं। वास्तविक्ता में मुसलमान उसी खुदा की इबादत करते हैं जिसकी तरफ नूह, इब्राहीम, मूसा